CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत साहित्य सौरभ

मेघदूत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

संस्कृत-साहित्य-सौरभ
१७

कालिदास-कृत

मेघदूत

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
कथासार

हि. १७५८

विष्णु प्रभाकर
द्वारा
संपादित

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६०
सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

तीसरी बार, १९६०
मूल्य
[redacted] नये पैसे

मुद्रक
भारत मुद्रणालय,
शाहदरा, दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें, परन्तु उसका रस वे हिन्दी द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं। पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया है।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रन्थ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

तीसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुई हैं। भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को आगे और भी चाव से अपनायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूमिका

कालिदास के काव्य-ग्रन्थों में 'ऋतुसंहार', 'कुमारसंभव', 'रघुवंश' और 'मेघदूत' विशेष प्रसिद्ध हैं। मेघदूत खण्ड-काव्य है। अलकापुरी के एक यक्ष को किसी अपराध पर देश-निकाले का दण्ड दिया जाता है। वह दक्षिण भारत में रामगिरि पर जाकर रहता है। वहीं से वह बादल (मेघ) को दूत बनाकर अपना संदेश अपनी पत्नी के पास भेजता है। इस खण्ड-काव्य के दो भाग हैं। पूर्वमेघ में देवगिरि से अलकापुरी तक के मार्ग का वर्णन है और उत्तरमेघ में अलकापुरी का।

कविता बड़ी मनोहारी है। पूरी रचना सुमधुर मन्दाक्रान्ता छन्द में है। प्रकृति का जितना मनोरम चित्रण इस खण्ड-काव्य में हुआ है, उतना शायद ही कहीं हुआ हो। पूर्व-मेघ में तो आरम्भ से लेकर अंत तक यही है। ऋतु, नदी, पर्वत सभी के परम सुन्दर और रमणीय चित्रों से पुस्तक भरी पड़ी है। एक ओर प्राकृतिक सुन्दरताओं का चित्रण है तो दूसरी ओर बाहरी और भीतरी, दोनों संसारों का सम्बन्ध भी दिखाया गया है। मनुष्य के मनोभावों और पशु-पक्षी जगत की मनोहर चेष्टाओं का वर्णन भी कवि की कुशल लेखनी से छूटा नहीं है।

कालिदास जिन उपमाओं के लिए प्रसिद्ध हैं, वे भी इस खण्ड-काव्य में बिखरी पड़ी हैं। भारत के तत्कालीन भूगोल पर भी यह काव्य अच्छा प्रकाश डालता है। कवि को प्रत्येक स्थान की स्थानीय विशेषताओं का यथार्थ ज्ञान था, ऐसा इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है।

—संपादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेघदूत

पूर्वमेघ

उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत के ऊपर यक्षों के राजा कुबेर की राजधानी अलकापुरी है। वहां पर एक यक्ष राजा की सेवा में रहता था; पर उसका मन अपनी स्त्री में लगा रहता था। इसी बेसुधी में एक दिन उससे कुछ भूल हो गई। बस कुबेर को क्रोध आ गया और उन्होंने उस यक्ष को एक साल के लिए देश से निकल जाने का दण्ड दे दिया। इस शाप के कारण उसका सब राग-रंग समाप्त हो गया, क्योंकि वह अपनी पत्नी को साथ नहीं ले जा सकता था। विरह के ये दिन काटने के लिए वह दक्षिण में रामगिरि नाम के पर्वत पर उन आश्रमों में रहने लगा, जिनमें त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र और सीताजी वनवास का समय काटने के लिए ठहरे थे। यहां के कुण्ड और तालाब सीताजी के स्नान करने के कारण पवित्र हो चुके थे और घनी छायावाले बहुत से पेड़ वहां लहरा रहे थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वहां रहता हुआ वह यक्ष धीरे-धीरे इतना दुर्बल हो गया कि उसके हाथ के सोने के कंगन ढीले पड़ गये। फिर भी किसी तरह रोते-कलपते उसने आठ महीने बिता दिये। आखिर आषाढ़ का पहला दिन आ पहुंचा। उस दिन उसने देखा कि सामने की पहाड़ी की चोटी से लिपटा हुआ बादल ऐंसा लग रहा है मानो कोई हाथी अपने सिर की टक्कर से मिट्टी के टीले को गिराने का खेल कर रहा हो। मन में प्रेम जगाने-वाले उस बादल को देखकर कुबेर का वह सेवक, आंखों में आंसू भरे बहुत देर तक स्थिर खड़ा रहा और सोचता रहा। बादलों को देखकर सुखी लोगों का मन भी डावांडोल हो जाता है, फिर वह तो दुखी था। घर से दूर था। उस बादल को देखकर वह सोचने लगा कि अब आषाढ़ बीत जायगा और सावन आ जायगा। तब मेरी स्त्री की क्या दशा होगी ! मैं वहां नहीं जा सकता; लेकिन इन बादलों के हाथ अपना कुशल-समाचार तो भेज ही सकता हूं। इससे उसको ढाढ़स बंधेगा। वह सुखी होगी। बस, यह सोचकर वह बहुत प्रसन्न हुआ। इसके बाद सबसे पहले उसने फूलों से बादल की पूजा की और प्रेम-भरी वाणी से कुशल-मंगल पूछकर उसका स्वागत किया। भला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोचिये कहां तो धुएं, आग, जल और हवा के मेल से बना हुआ वह बादल, कहां वह संदेशा, जिसे बहुत ही चतुर और बुद्धिमान लोग ला और ले जा सकते हैं ! लेकिन उस यक्ष को तो अपने तन-मन की सुधि थी ही नहीं। वह इन बातों पर विचार कैसे करता ? वह तो बस अपना सन्देशा भेजने के लिए बादल के आगे गिड़-गिड़ाने लगा। उसकी बड़ाई करते हुए वह बोला, "संसार में बादलों के दो ऊंचे कुल प्रसिद्ध हैं—पुष्कर और आवर्तक। आपने उन्हीं ऊंचे कुलों में जन्म लिया है। आप देवराज इन्द्र के दूत हैं। आप जैसा चाहें, वैसा रूप बना सकते हैं। इन्हीं गुणों के कारण मैं आपके आगे हाथ फैला रहा हूं। गुणी के आगे हाथ फैलाकर निराश हो जाना अच्छा है; लेकिन नीच व्यक्ति से मनचाहा फल पाना भी अच्छा नहीं है।

"हे मेघ, तुम दुखियों को शरण देनेवाले हो और कुबेर के क्रोध के कारण अपने घर से बिछुड़कर मैं बहुत दुखी हो रहा हूं। इसलिए तुम मेरा संदेश मेरी पत्नी के पास पहुंचा दो। इसके लिए तुम्हें अलकापुरी नाम की यक्षों की बस्ती तक जाना होगा। वहां यक्ष लोग बड़े ठाठ-बाट से रहते हैं। बस्ती के बाहर के उद्यान में शिवजी की मूर्ति है। उसके उलाट में जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रमा जुड़ा हुआ है, उसकी चांदनी से उस नगरी के ऊंचे-ऊंचे महलों में सदा उजाला रहा करता है।

"जब तुम हवा के पंखों पर सवार होकर ऊपर चढ़ोगे, तो तुम्हें देखकर उन स्त्रियों को बड़ा ढाढ़स बंधेगा, जिनके पति परदेस गये हुए हैं। हे बादल, ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां तुम न पहुंच सको। इसलिए तुम अपनी पतिव्रता भाभी को जरूर ढूंढ़ लोगे। वह बैठी हुई मेरे लौटने के दिन गिन रही होगी। जो बिछुड़ जाते हैं, वे मिलने की आशा के भरोसे ही तो जीते रहते हैं।

"देखो, सगुन भी सब अच्छे हो रहे हैं। तुम्हारा साथी वायु तुम्हें धीरे-धीरे आगे बढ़ा रहा है। बायीं ओर अपनी आन का पक्का यह चातक अपनी मीठी बोली बोल रहा है। तुम्हारा सलोना-सुहावना रूप देखकर बगुलिया भी पंखा झलने के लिए अभी उड़कर आती होगी। जो धरती को उपजाऊ बनानेवाला है, वही कानों को प्यारा लगनेवाला तुम्हारा गरजना सुनकर मानसरोवर को जानेवाले राजहंस, अपनी चोंचों में कमल की डंठल लिये कैलास पर्वत तक तुम्हारे साथ-साथ उड़ेंगे। हे बादल, तुम जिस पहाड़ से चिपके हुए हो, उस पर जगह-जगह रामचन्द्रजी के पैरों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निशान बने हुए हैं। उन निशानों को सारा संसार पूजता है। तुम जब-जब इससे मिलने आते हो, तब-तब बहुत दिनों में मिलने के कारण यह अपना प्रेम गरम-गरम आंसू बहाकर प्रकट करता है।

"अच्छा, अब मैं पहले तुम्हें वह रास्ता बता दूं, जिसपर जाने में तुम्हें कष्ट नहीं होगा। उसके बाद सन्देशा दूंगा। देखो, जब चलते-चलते तुम थक जाओ, तो रास्ते में आनेवाली पहाड़ की चोटियों पर ठहरे जाना और जब पानी की जरूरत हो, तो झरनों का जल पी लेना। जब तुम इस पहाड़ी से ऊपर उड़ोगे, तो सिद्धों की भोली-भाली स्त्रियां अचम्भे में भरकर तुम्हारी ओर देखेंगी। उन्हें ऐसा जान पड़ेगा मानो हवा पहाड़ की चोटी को उड़ाये लिये जा रही है। इस प्रकार ठाठ से उड़ते हुए तुम उत्तर की ओर घूम जाना।

"वह, जो सामने रत्नों की तरह चमकता हुआ इन्द्रधनुष का एक टुकड़ा दिखाई दे रहा है, उससे तुम्हारा सांवला शरीर ऐसा सुन्दर हो गया है, जैसे मोर-मुकट पहने हुए ग्वाले के वेश में नन्द-नन्दन आकर खड़े हो गये हों। खेती का होना या न होना सब तुम्हारे ऊपर निर्भर है, इसलिए किसानों की भोली-भाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्रियां तुम्हारी ओर बड़े प्रेम और आदर से देखेंगी। वहां मालदेश के उन खेतों पर, जो अभी जोते गये हैं और जिनमें से सोंधी-सोंधी सुगन्ध उठ रही होगी, बरसकर तुम पश्चिम की ओर घूमना और झटपट उत्तर की ओर बढ़ जाना। जब तुम आम्रकूट के जंगलों में मूसलाधार जल बरसा चुकोगे, तो वह तुम्हारा उपकार मानकर, बड़े प्रेम और आदर से मित्र के समान तुम्हें अपनी चोटी पर ठहरायगा। वह पके हुए फलों से लदे आम के पेड़ों से घिरा होने के कारण पीला-पीला लगेगा। थोड़ी देर ठहरकर तुम आगे बढ़ना। जल बरसा देने से तुम्हारा बदन हलका हो जायगा और तुम्हारी चाल बढ़ जायगी। वहां से आगे विन्ध्याचल के पथरीले पठार पर बहुत-सी धाराओं में फैली हुई रेवा नदी मिलेगी। ऊपर से वह तुम्हें ऐसी दिखाई देगी, जैसे किसी बड़े हाथी के शरीर पर भभूत से चित्रकारी की गई हो। वहां बरसकर और उसका जल पीकर तब तुम आगे बढ़ना। जल पीकर जब तुम भारी हो जाओगे, तो हवा तुम्हें इधर-उधर झुला नहीं सकेगी। जो भरे-पूरे हैं, उनका सभी आदर करते हैं। मैं जानता हूं मेरे काम के लिए तुम बिना रुके जल्दी जाना चाहोगे। फिर भी मैं समझता हूं कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कुटज के फूलों से लदे उन पहाड़ों पर तुम्हें ठहरना ही होगा, क्योंकि वहां के मोर आंखों में खुशी के आंसू भरे अपनी प्यारी कूक से तुम्हारा स्वागत करेंगे। पर मुझे यह भी आशा है कि जैसे भी होगा तुम वहां से जल्दी-से-जल्दी चल दोगे।

"कुछ आगे चलकर तुम दशार्ण देश में पहुंच जाओगे। वहां के उपवन फूले हुए केवड़ों के कारण उजले दिखाई देंगे। वहां के गांवों के मन्दिर पक्षियों के घोंसलों से भरे मिलेंगे और वहां के जंगल पकी हुई काली जामनों से लदे हुए होंगे। वहां कुछ दिन हंस भी रहेंगे। इस देश की राजधानी विदिशा है। वहां तुम सुहावनी और नाचती हुई लहरोंवाली वेत्रवती नदी के निकट 'नीच' नाम की पहाड़ी पर थकावट मिटाने के लिए उतर जाना। वहां पर फूले हुए कदम्ब के पेड़ ऐसे लगेंगे, जैसे वे तुमसे मिलकर पुलक उठे हों। कुछ देर थकावट मिटाकर और नदी के तट पर उपवनों में जो जूही की कलियां खिली हुई हैं, उन्हें सींचते हुए और मालिनों से कुछ जान-पहचान करते हुए आगे बढ़ जाना।

"यद्यपि तुम्हें फेर पड़ जायगा, क्योंकि तुम्हें उत्तर को जाना है, फिर भी तुम उज्जयिनी के राजभवनों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखना मत भूलना। उस ओर जाते हुए रास्ते में निर्विन्ध्या नदी का रस भी लेना। उसकी लहरों पर पक्षी पांतें बनाकर उड़ रहे होंगे और वह ऐसे सुन्दर ढंग से रुक-रुककर बह रही होगी कि उसमें पड़ी भंवर तुम्हें नाभि-जैसी दिखाई देगी। जल बरसाकर तुम उसे भर देना। यहां से आगे बढ़कर तुम्हें अवन्ति देश मिलेगा। वहां तुम धन-धान्य से भरी हुई उस विशाला नगरी को देखना, जहां गांव के बड़े-बूढ़े लोग महाराज उदयन की कथा खूब अच्छी तरह जानते हैं। यह उज्जयिनी नगरी ऐसी लगती है, मानो पुण्यात्मा लोग अपने कुछ पुण्य के बदले स्वर्ग का एक चमकीला भाग अपने साथ लेकर धरती पर उतर आये हों। यहां के बाजारों में कहीं तो बीच में रत्नजड़ित मोतियों की मालाएं होंगी, कहीं करोड़ों शंख, सीपियां और चमकीले नीलम बिछे दिखाई देंगे। उन्हें देखकर यही जान पड़ेगा कि समुद्र के सब रत्न निकालकर यहां ला रखे हैं। वहां के जानकार लोग बाहर से आये हुए अपने नातेदारों को उदयन और वासवदत्ता की कथा सुना रहे होंगे कि कैसे यहां पर वत्स देश के राजा उदयन ने उज्जयिनी के महाराज चंडप्रद्योत की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारी बेटी वासवदत्ता को हरा था। यहीं पर उनका बनाया हुआ ताड़ के वृक्षों का सुनहरा उपवन था। यहीं पर नलगिरि नाम वाला हाथी खूंटा उखाड़ कर पागल हुआ इधर-उधर घूमता-फिरता था। वहां के मोर तुम्हें अपना समझकर नाच-गान से तुम्हारा स्वागत-सत्कार करेंगे। फूलों की सुगन्ध से महकते हुए वहां के भवनों की सजावट देखकर तुम अपनी थकावट दूर कर लेना और फिर तीनों लोकों के स्वामी चण्डीश्वर महाकाल के पवित्र मन्दिर की ओर जाना। वहां शिव के गण तुम्हें अपने स्वामी के नीले कण्ठ के समान नीला देखकर तुम्हारा बड़ा आदर करेंगे। यदि तुम उस मन्दिर में सांझ से पहले पहुंच जाओ तो आरती होने तक रुक जाना और अपने गर्जन का नगाड़ा बजाने लगना। सांझ की पूजा हो चुकने पर जिस समय महाकाल ताण्डव नृत्य करने लगें, उस समय तुम सांझ की लाली लेकर उन पेड़ों पर छा जाना, जो उनकी ऊंची उठी हुई बांह के समान खड़े होंगे। तब ऐसा लगेगा, जैसे शिवजी ने हाथी की खाल ओढ़ ली है। यह देखकर पार्वतीजी डर जायंगी; पर फिर तुम्हें पहचानकर उनका डर दूर हो जायगा और वह शिव में तुम्हारी इतनी भक्ति देख-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर बड़ी खुश होंगी। जब बार-बार चमकने से तुम्हारी साथिन बिजली थक जाय, तो तुम किसी ऐसे मकान के छज्जें पर रात बिता देना, जहां पर कबूतर सोये हुए हों। फिर दिन निकलते ही वहां से चल देना, क्योंकि जो अपने मित्रों का काम करने का निश्चय कर चुका है, वह आलस नहीं कर सकता।

"उज्जयिनी से आगे बढ़कर तुम्हें निर्मल जलवाली गंभीरा नदी मिलेगी। तुम्हारे सांवले-सलोने शरीर की परछाईं उसमें दिखाई देगी। तुम उसका निरादर मत कर बैठना। उसका जल पीना। फिर वहां सें तुम देवगिरि पहाड़ की ओर जाना। इसी देवगिरि पर देवताओं की सेना के सेनापति स्कन्द भगवान रहते हैं। इसलिए वहां तुम फूल बरसानेवाले बादल बनकर उनपर आकाश-गंगा के जल में भीगे हुए फूल बरसाना। इस प्रकार उनका स्नान हो जायगा। उन्हें तुम ऐसा-वैसा देवता न समझना। इन्द्र की सेनाओं को बचाने के लिए उनका जन्म हुआ है। वहां पहुंचकर तुम इतने जोर से गरजना कि पर्वतों की गुफाएं गूंज उठें। उस गूंज को सुनकर स्वामी कार्तिकेय का मोर नाच उठेगा। उसकी आंखों के कोने शिव के मस्तक पर विराजमान चन्द्रमा की चमक से दमकते रहते हैं। स्कन्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भगवान की पूजा करने के बाद जब तुम आगे बढ़ोगे, तो तुम्हें चर्मण्वती नदी मिलेगी। उसका आदर करने के लिए तुम नीचे उतर जाना, क्योंकि वह राजा रन्तिदेव के यज्ञ की कीर्ति बनकर बह रही है। इस नदी को पार करके तुम दशपुर की ओर बढ़ना और वहां से ब्रह्मावर्त देश पर छाया करते हुए कुरुक्षेत्र पहुंच जाना। कौरवों-पाण्डवों के घरेलू युद्ध के कारण यह आज तक बदनाम है। यहींपर गाण्डीवधारी अर्जुन ने अपने शत्रुओं के मुख पर उसी प्रकार अनगिनत वाण बरसाये थे, जैसे तुम कमलों पर अपनी जलधारा बरसाते हो। इसी कुरुक्षेत्र में सरस्वती नदी बहती है। कौरव-पाण्डव दोनों को समान प्रेम करनेवाले बलरामजी इसीका जल पीते थे। तुम भी अगर इसका जल पी लोगे, तो बाहर से काले होने पर भी तुम्हारा मन उजला हो जायगा।

"कुरुक्षेत्र से आगे बढ़कर तुम कनखल जाना। वहां पर तुम्हें महाराज सगर के साठ हजार पुत्रों को मुक्ति देनेवाली हिमालय की गोद से उतरती हुई गंगाजी मिलेंगी। यदि तिरछे होकर तुम उनका जल पीना चाहोगे, तो तुम्हारी चलती हुई छाया गंगाजी की धारा में पड़कर ऐसी लगेगी, जैसे प्रयाग पहुंचने से पहले ही गंगाजी में यमुनाजी मिल गई हों। वहां से आगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुम हिमालय पर्वत की उस चोटी पर बैठकर थकावट मिटाना, जहां से गंगाजी निकली हैं। उसकी शिलाओं पर कस्तूरी मृग बैठे रहते हैं और उसके शिखर पर सदा बर्फ जमी रहती है। उसपर बैठें हुए तुम ऐसे दिखाई दोगे, जैसे महादेवजी के श्वेतवर्ण के सांड के सींगों पर मिट्टी के टीलों पर टक्कर मारने से कीचड़ जम गया हो। हे बादल, आंधी चलने पर देवदार पेड़ों की रगड़ से जंगल में आग लग जाय, तो तुम धुंआधार पानी बरसाकर उस आग को बुझा देना, क्योंकि भले लोगों के पास जो कुछ होता है, वह दीन-दुखियों का दुख मिटाने के लिए होता है। देखो, जब शरभ जाति के हिरन दूर होने पर भी तुमसे लड़ने के लिए मचल-मचलकर उछलें और अपने हाथ-पैर तुड़वाने के लिए तुम पर सींग चलाने को झपटें, तो तुम धुंआधार ओले बरसाकर उन्हें भगा देना। वहीं एक शिला पर शिवजी के पैर की छाप बनी हुई है। सिद्ध लोग सदा उसकी पूजा करते रहते हैं। तुम भी भक्तिभाव से झुककर उसकी पूजा कर लेना, क्योंकि उसके दर्शन-मात्र से श्रद्धालु लोगों के पाप धुल जाते हैं और शरीर छोड़ने पर वे शिवजी के गण हो जाते हैं। वहां पर जब पोले बांसों में हवा भरने लगती है, तो उनमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से बांसुरी के समान मीठे-मीठे स्वर निकलने लगते हैं और किन्नरियां उनमें अपना स्वर मिलाकर त्रिपुर-विजय का गीत गाने लगती हैं। वहां जब तुम अपनी गरज से पहाड़ की गुफाओं को गुंजाकर मृदंग के समान शब्द करने लगोगे, तो भगवान शंकर के संगीत के सब अंग पूरे हो जायेंगे।

"हिमालय पर्वत के आसपास जितने सुन्दर और सुहावने स्थान हैं, उन सबको देखकर तुम क्रौंचरंध्र में से होकर उत्तर की ओर जाना। इसी मार्ग से होकर हंस मानसरोवर की ओर जाते हैं। इसीको अपने वाण से छेदकर परशुराम अमर हो गये हैं। इस संकरे मार्ग से होकर और कुछ ऊंचे उठकर तुम कैलास पहुंच जाओगे। अपने बल के घमण्ड में आकर रावण ने इसकी चोटियों को हिला डाला था। हे बादल, तुम चिकने घुटे हुए अंजन के समान काले हो और कैलास तुरन्त काटे हुए हाथी-दांत के समान गोरा है। इसलिए जब तुम उसके ऊपर पहुंचोगे तो ऐसे मनोहर लगोगे जैसे बलरामजी के कन्धों पर पड़े हुए चमकदार काले वस्त्र। आंखें तुम्हें एकटक देखती ही रह जायंगी।

"उस कैलास पर जब भगवान शंकर सांपों के गहने उतारकर पार्वतीजी के साथ घूम रहे हों, तो उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय तुम बरसना मत, बल्कि आगे बढ़कर सीढ़ी के समान बन जाना जिससे उन्हें ऊपर चढ़ने में सुविधा हो। हे मित्र! वहां रहनेवाली अप्सराएं बड़ी विनोद-प्रिय हैं। वे अपने नग-जड़े कंगनों की नोक तुम्हारे बदन में चुभोकर तुममें से पानी की धाराएं निकालेंगी और तुम्हें फौवारा बना लेंगी। उनसे छुटकारा पाने के लिए तुम जोर से गरजकर उन्हें डरा देना। देखो, वहां पहुंचकर तुम पहले तो सुनहरे कमलोंवाले मानसरोवर का जल पीना, फिर थोड़ी देर ऐरावत का मन बहलाना। फिर कल्पद्रुम के कोमल पत्तों को हिलाना। इस प्रकार तरह-तरह के खेल करते हुए तुम जी भरकर कैलास पर घूमना। उसी कैलास की गोद में अलकापुरी बसी हुई है। वहां से निकली हुई गंगा ऐसी लगती है मानो अलका नगरी-रूपी नारी के बदन पर से सरकी हुई साड़ी हो। ऐसी अलका को देखकर तुम पहचान न पाओ, यह नहीं हो सकता। उसके उंचे-ऊँचे महलों पर वर्षा ऋतु में बरसते हुए बादल ऐसे छाये रहते हैं, जैसे स्त्रियों के सिर पर मोती गुंथे हुए जूड़े।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तर-मेघ

"हे बादल ! अलकापुरी के ऊंचे-ऊंचे भवन सब बातों में तुम्हारे-जैसे हैं। तुम्हारे साथ बिजली है, तो उन महलों में नारियां रहती हैं। तुम्हारे पास इन्द्र-धनुष है, तो उन महलों में रंगबिरंगी तसवीरें लटकी हुई हैं। तुम मीठे स्वर में गम्भीर गर्जन कर सकते हो, तो महलों में भी संगीत के समय मृदंग बजते हैं। तुम्हारे भीतर नीला जल है, जिससे तुम कान्तिमान हो, तो वे महल नीलमादि रत्नों से जड़े रहने के कारण कान्तिमान हैं। तुम ऊंचे पर हो, तो वहां के भवन भी आकाश को चूमते हैं।

"देखो मित्र, वहां की कुलवधुएं हाथों में कमल के गहने पहनती हैं। चोटियों में, जूड़े में, कानों पर और मांग में तरह-तरह के फूल लगाती हैं। मुंह पर फूलों का पराग मलती हैं। वहां पर बारहों महीना फूलनेवाले ऐसे बहुत-से पेड़ हैं, जिनपर मस्त भौंरे गुनगुनाते रहते हैं। हमेशा खिलनेवाले कमल और कमलिनियों को हंस घेरे रहते हैं। वहां सदा चमकदार पंखोंवाले पालतू मोर सिर ऊंचा किये हुए रात-दिन बोलते रहते हैं। वहां की रातें सदा पूर्णिमा के प्रकाश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से चमकने के कारण बड़ी प्यारी और मनभावनी लगती हैं। वहां के रहनेवाले यक्षों की आंखों में हमेशा आनन्द के आंसू ही आते हैं। बस वे प्रेम में ही रूठते हैं और कभी कोई किसीसे नहीं बिछुड़ता। वे लोग सदा जवान रहते हैं। वहां की कन्याएं बड़ी सुन्दर हैं। वे अपनी मुट्ठियों में रत्न लेकर और उनको सुनहरी बालुका में डालकर छिपाने और ढूंढ़ने का खेल खेला करती हैं।

"हे बादल! तुम्हारे-जैसे बहुत से मेघ हवा के झोंकों के साथ उन ऊंचे-ऊंचे महलों के ऊपरी खण्डों में घुस जाते हैं और दीवारों पर टंगे हुए चित्रों को अपनी फुआरों से भिगोकर मिटा देते हैं और इसके बाद भय के मारे झरोखों की जालियों में से छितरा-छितरा-कर निकाल भागते हैं। धुएं का रूप वनाने में वे बड़े चतुर हैं। वहां के लोग बड़े विलासी हैं। वहां सिंगार की सारी सामग्री अकेले कल्पवृक्ष से मिल जाती है। वहां के सांवले घोड़े अपने रंग और अपनी चाल के सामने सूरज के घोड़ों को भी कुछ नहीं समझते। वहां के हाथी पहाड़-जैसे डील-डौलवाले हैं। वे उसी प्रकार मद बरसाते हैं, जिस प्रकार तुम जल बरसाते हो। वहां के योद्धा ऐसे लड़ाके हैं कि उन्होंने अपने सब गहने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उतार दिये हैं और उन घावों के निशानों को ही गहने समझ लिया है, जो उन्होंने रावण से युद्ध करते समय उसकी चन्द्रहास नाम की तलवार से खाये थे। वहीं पर कुबेर के मित्र शिवजी भी रहते हैं।

"उसी अलकापुरी में कुबेर के उत्तर की ओर मेरा घर है। उसका द्वार इन्द्रधनुष के समान सुन्दर और गोल है। ऐसा वह मेरा घर तुम्हें दूर से ही दिखाई पड़ेगा। उसीके पास एक छोटा-सा कल्पवृक्ष है। उसे मेरी पत्नी ने पुत्र के समान पाला है। फूलों के बोझ से वह इतना झुका हुआ होगा कि नीचे खड़े होकर कोई भी, हाथ से ही, उन फूलों को तोड़ सकता है। जब तुम घर के भीतर जाओगे तो तुम्हें एक बावड़ी मिलेगी। उसकी सीढ़ियों पर नीलम जड़ा हुआ है। उसमें वैदूर्य मणि की नालवाले अनेक सुनहरे कमल खिले होंगे। उसके जल में रहनेवाले हंस इतने सुखी हैं कि तुम्हें देखकर भी वे मानसरोवर, जो इतना पास है, जाना नहीं चाहेंगे।

"उस बावड़ी के तट पर एक बनावटी पहाड़ है। उसकी चोटी नीलमणि की बनी हुई है। चारों ओर से सुनहरे केलों से घिरे रहने के कारण उसकी छवि देखते ही बनती है। मित्र, वह पर्वत मेरी पत्नी को बड़ा प्यारा है। इसलिए जब तुम्हें बिजली के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखता हूं, तो मेरा मन उदास हो जाता है और मुझे उस पहाड़ की याद आ जाती है। यह सब अकेला होने के कारण ही होता है। उस बनावटी पहाड़ पर कुरबक के पेड़ों से घिरा हुआ माधवी मण्डप है। उसके पास दो पेड़ हैं, एक लाल अशोक का, दूसरा मौलश्री का।

"उन दोनों पेड़ों के बीच में एक चौकी है, जो नये बांस के समान चमकीली मणियों से बनी हुई है। उस चौकी के ऊपर स्फटिक की एक चौकोर पटिया रखी हुई है। उस पटिया पर एक सोने की छड़ रखी हुई है। तुम्हारा मित्र मोर प्रतिदिन सांझ को उसपर आकर बैठता है और मेरी पत्नी उसे अपने उन हाथों से ताल दे-देकर नचाती है, जिनमें उसने घूंघरूवाले कड़े पहने होते हैं।

"हे साधु! यदि तुम मेरे बताये हुए इन चिह्नों को भली भांति ध्यान में रखोगे और द्वार पर शंख और पद्म के बने हुए चित्र देख लोगे, तो तुम मेरा घर अवश्य पहचान लोगे। अब वहां मेरे न रहने से बड़ा सूना-सूना और उदास-सा दिखाई देता होगा। सूर्य के अस्त हो जाने पर कमल उदास हो ही जाता है। देखो, यदि तुम ज़ल्दी से मेरे घर में जाना चाहो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो हाथी के बच्चे के समान छोटे बन जाना और खेल के लिए बनाई हुई पहाड़ी की सुहावनी चोटी पर जा बैठना। फिर अपनी बिजली की आंख जुगनुओं की तरह रुक-रुककर चमकाना और मेरे घर के भीतर झांकना। वहां जो तुम्हें दुबली-पतली, नन्हें-नन्हें दांतों-वाली, लाल ओंठ और पतली कमरवाली तथा डरी हुई हिरनी के समान आंखोंवाली युवती दिखाई दे, उसे ही मेरी पत्नी समझना। वह बड़ी सुन्दर है, मानो ब्रह्मा की सबसे बढ़िया कारीगरी हो। लेकिन मेरे वहां न रहने के कारण उसका रूप बदल गया होगा। वह पाले से मारी हुई कमलिनी के समान लगती होगी। दिन-रात रोते रहने के कारण उसके नेत्र सूज गये होंगे। चिंता के कारण गालों पर हाथ धरने से और बालों के मुंह पर आ जाने से, उसका अधूरा दिखाई देनेवाला मुंह बादल से ढके चन्द्र के समान धुंधला और उदास दिखाई दे रहा होगा। देखो बादल, या तो तुम उसे मेरी कल्याण-कामना के लिए देवताओं की पूजा करते हुए देखोगे या वह कल्पना से मेरा चित्र बनाती होगी, अथवा पिंजड़े में बैठी हुई मृदुभाषी मैना से कुछ बातचीत करती होगी। या भैया! वह मैले वस्त्र धारण किये हुए अपनी गोद में वीणा रखे मेरे नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के गीतों को गाने की चेष्टा करती होगी। उस समय वह अपने आंसुओं से भीगी हुई वीणा को जैसे-तैसे पोंछ लेगी; पर मेरी याद आ जाने से वह ऐसी बेसुध हो जायगी कि सधे हुए स्वरों के उतार-चढ़ाव को भी बार-बार भूल रही होगी। या फिर मेरे जुदा होने के दिन से ही वह प्रतिदिन देहली पर जो फूल रखती रही होगी, उन्हें धरती पर फैलाकर यह हिसाब लगा रही होगी कि अब मेरे आने के कितने दिन शेष रह गये हैं।

"हे मित्र ! दिन तो गृहस्थी के झंझटों में फंसे रहने के कारण किसी-न-किसी प्रकार कट जाता होगा; परन्तु रात बिताना उसके लिए बड़ा कठिन काम होता होगा। इसलिए तुम मेरा संदेशा सुनाकर उसे सुखी करने के लिए आधी रात के समय मेरे घर के झरोखों पर बैठकर उसे देखना। उस समय वह उनींदी-सी धरती पर पड़ी होगी। उसकी सखियां उसके पास होंगी। संसार में सभी स्त्रियां अपनी सखियों के दुख में कभी उनका साथ नहीं छोड़तीं। इसलिए थोड़ी देर पलंग के पास खिड़की पर बैठकर राह देखना। जब वे सो जायं, तभी तुम मेरी पत्नी के पास जाना। वह बहुत दुखी होगी। कहीं धरती पर एक करवट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पड़ी होगी और आंसू बहा रही होगी। उसकी वह दशा देखकर तुम भी रोये बिना न रह सकोगे। दूसरों का दुख देखकर कौन ऐसा कोमल हृदयवाला है, जो करुणा से भीग न जाय।

"हे मेघ ! तुम्हारे पहुंचने पर उसका बायां नेत्र फड़कने लगेगा। लेकिन उस समय यदि वह सो रही हो, तो तुम मौन होकर वहीं बैठ जाना। उसे जगाना मत। हां, यदि एक पहर ठहरने पर भी वह आंखें न खोले, तो तुम अपने जल से शीतल की गई पवन चलाकर उसे जगाना। जब वह झरोखे से एकटक तुम्हें देखे, तो तुम बिजली छिपा लेना और उससे बातें करना। तुम उससे कहना, 'हे सौभाग्यवती ! मैं तुम्हारे पति का प्रिय मित्र मेघ हूं। तुम्हारे पास उनका सन्देश लेकर आया हूं।' यह सुनकर वह तुम्हारी ओर मुंह करके बड़े चाव, बड़ी प्रसन्नता और बड़े आदर से मेरा सन्देश उसी प्रकार सुनेगी, जैसे सीताजी ने हनुमानजी की बातें सुनी थीं। हे प्रिय मित्र ! तुम उससे कहना, 'तुम्हारा पति रामगिरि के आश्रमों में सकुशल है और तुम्हारी कुशल जानना चाहता है।' जिनपर अचानक विपत्ति आ गई हो, उनसे यही कहना ठीक होता है। उससे कहना कि ब्रह्मा ने उसका मार्ग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रोक रखा है। वह तुझसे मिल नहीं सकता। तेरे वियोग में वह बहुत दुखी है और वह समझता है कि तुम भी वैसी ही दुखी होगी, वैसी ही दुबली हो गई होगी, वैसे ही रोती होगी। वह निरन्तर तुम्हारी याद करता है। वह तुम्हारा चित्र बनाना चाहता है; लेकिन आंखों में आंसू आ जाने के कारण कुछ नहीं हो पाता। वह मन-ही-मन यह कामना किया करता है कि किसी प्रकार रात के लम्बे-लम्बे तीन पहर क्षण के समान छोटे हो जायं, पर सब प्रार्थना बेकार हो जाती है।

"तुम उससे कहना, 'मेरा जी बैठा जा रहा है। फिर भी सोच-विचारकर मैं सन्तोष कर लेता हूं। तुम भी बहुत दुखी न होना। दुख या सुख सदा नहीं रहते। वे तो पहिये के चक्कर के समान ऊपर-नीचे होते रहते हैं। देखो, अगली देवउठनी एकादशी को जब विष्णु भगवान शेषनाग की शय्या से उठेंगे, तब मेरा शाप भी बीत जायगा। इसीलिए इन बचे हुए चार महीनों को किसी प्रकार आंख मूंदकर बिता डालो। उसके बाद तो हम मिलेंगे ही। लोगों के कहने से तुम मेरे प्रेम में सन्देह न करना। न जाने लोग यह कैसे कहते हैं कि विरह में प्रेम कम हो जाता है। सच्ची बात तो यह है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि जब मनचाही वस्तु नहीं मिलती, तभी उसको पाने की चाह बढ़ती है और ढेर सारा प्रेम इकट्ठा हो जाता है।'

"देखो बादल! अपनी दुखी भाभी को इस प्रकार दिलासा देकर, उसकी कुशल जानकर और पहचान लेकर तुम मेरे पास लौट आना और मेरे प्राणों की रक्षा करना। क्यों प्यारे भाई! तुम मेरा यह काम करोगे न? मेरे ऐसे पूछने से यह न समझ बैठना कि मैं तुमसे 'हां' भरवाने पर ही तुम्हें इस काम के योग्य समझूंगा। नहीं, मैं जानता हूं कि जब पपीहे तुमसे जल मांगते हैं, तो बिना उत्तर दिये तुम उन्हें जल दे देते हो। भले आदमियों की यही रीति है कि जब कोई उनसे कुछ मांगता है, तो वे मुंह से कुछ नहीं कहते। बस उसका काम पूरा कर देते हैं। हे मेघ! यद्यपि मेरी प्रार्थना अनुचित हैं, पर चाहे मित्रता के नाते, चाहे मुझपर तरस खाकर तुम पहले मेरा काम कर देना। फिर अपना बरसाती रूप लेकर जहां इच्छा हो वहां घूमना। मैं यही कामना करता हूं कि तुम्हारी बिजली तुमसे कभी अलग न हो।"

यक्ष की ये बातें सुनकर इच्छानुसार रूप बदलने-वाला वह बादल रामगिरि से चल दिया। कभी पर्वतों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर, कभी नदियों के पास, कभी नगरों में विश्राम करता हुआ थोड़े ही दिनों में अलकापुरी जा पहुंचा। बताये हुए चिह्नों को देखकर उसने यक्ष का सोने के समान चमकता हुआ घर खोज लिया। अन्दर जाकर उसने देखा कि यक्ष की स्त्री बेचारी धरती पर पड़ी हुई है। यह देखकर सबका भला चाहनेवाले उस भले मेघ ने उसके प्राण बचाने के लिए उसके प्यारे पति का मधुर सन्देश उसे सुना डाला। अपने प्यारे पति का कुशल-समाचार पाकर यक्ष की पत्नी भी फूली न समाई। उसे बड़ा सुख मिला। सच है, अच्छें लोगों से काम करने को कहा जाय, तो वह अवश्य पूरा होता है।

इधर यक्षों के राजा कुबेर ने भी इस सन्देश की बात सुनी। तब उनके मन में बड़ी दया उपजी। उनका क्रोध उतर गया और उन्होंने अपना शाप लौटाकर उन दोनों को फिर मिला दिया।

इस मिलन से उनके सब दुख दूर हो गये और वे फिर पहले की तरह प्रसन्नता से रहने लगे। यही नहीं, कुबेर ने भी उनके लिए ऐसा प्रबन्ध कर दिया कि फिर कभी दुख उनके पास आकर फटका तक नहीं।

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट

मेघदूत में वर्णित प्राचीन कथाओं और स्थलों का परिचय

रामगिरि — चित्रकूट पर्वत

मालदेश — रीवां राज्य का वह प्रदेश, जो नर्मदा के उद्गम से लेकर विन्ध्याचल के पास तक फैला हुआ है।

आम्रकूट — अमरकंटक पर्वत। वह विन्ध्य प्रदेश के रीवां राज्य में है। सोन और नर्मदा का उद्गम इसी पर्वत में है।

रेवा — नर्मदा नदी।

दशार्ण देश — विन्ध्याचल के पूर्व और दक्षिण का वह प्रदेश, जिसमें धसान नदी बहती है।

विदिशा — भेलसा। बेतवा के किनारे बसा है।

वेत्रवती — बेतवा नदी। मालवा से निकलकर कालपी के पास यमुना में मिल जाती है।

नीच — विन्ध्याचल की एक प्रशाखा।

निर्विन्ध्या नदी — विन्ध्याचल पहाड़ से निकलनेवाली एक नदी।

विशाला नगरी — विशाला, उज्जैनी या उज्जयिनी एक ही इतिहास प्रसिद्ध और पवित्र नगरी के नाम हैं। मालवा-प्रदेश में यह शिप्रा के तट पर बसी है। मालवा को ही अवन्ति देश कहते थे।

महाराज उदयन— वत्स देश के राजा। वीणा बजाने में निपुण थे। अवन्ति के राजा चण्डप्रद्योत ने इन्हें धोखे से कैद कर लिया था और अपनी कन्या वासवदत्ता का शिक्षक बनाया था। एक दिन उसीको लेकर यह निकल भागे थे। दोनों में प्रेम था और वास्तव में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महाराज चण्डप्रद्योत स्वयं यही चाहते थे कि दोनों का विवाह हो। इस कथा को लेकर कवियों ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

वत्स देश — काशी के पश्चिम में प्रयाग के चारों ओर का प्रदेश। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

गंभीरा — चम्बल नदी की एक शाखा।

चर्मण्वती — चम्बल नदी। इन्दौर राज्य के एक पर्वत से निकलकर यमुना में मिल जाती है।

राजा रन्तिदेव — चन्द्रवंश के प्रसिद्ध दानी राजा।

दशपुर — मध्यभारत का मन्दसौर नगर।

ब्रह्मावर्त — प्राचीन उत्तर भारत का वह प्रदेश, जो सरस्वती और दृष्टवती (वर्तमान घग्घर) नदियों के बीच में था। इस प्रदेश में कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल और सूरसेन देश थे।

कुरुक्षेत्र — महाभारत के युद्ध के लिए प्रसिद्ध है। यह स्थान आजकल दिल्ली के पास पंजाब के करनाल जिले में स्थित है। प्राचीन काल में कुरु नाम के राजा ने इस स्थल में हल चलाया था, इसलिए यह कुरुक्षेत्र कहलाता है।

बलराम — श्रीकृष्ण के बड़े भाई, जो महाभारत युद्ध में किसी ओर से नहीं लड़े थे। दुर्योधन इनका शिष्य था।

राजा सगर — सूर्यवंश के एक प्रतापी राजा। इनके साठ हजार पुत्रों को कपिल मुनि ने भस्म कर दिया था। इन्हीं-का उद्धार करने के लिए सगर के प्रपौत्र महाराज भगीरथ कठिन तपस्या करने के बाद गंगा को धरती पर लाये थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्रिपुरा-विजय — तारकासुर एक असुर था। उसके तीन पुत्र थे। उन्होंने घोर तपस्या करके ब्रह्मा से यह वर पाया था कि हम तीनों तीन पुरों में रहकर पूजित हों। हम जब एक साथ मिल जायं, तब जो एक साथ तीनों पुरों का नाश कर दे, उसीके हाथ से हमारी मौत हो। मायादानव ने इनके लिए स्वर्ग में सोने का, अन्तरिक्ष में चांदी का और धरती पर लोहे का लोक बनाया। जब इन्होंने शक्ति के मद में देवताओं पर घोर अत्याचार करने शुरू किये, तवमहा देवजी ने इनको मार डाला था। उन्होंने सब देवताओं का आधा-आधा बल लिया, विश्वकर्मा ने उनके लिए रथ बनाया, ब्रह्मा उनके सारथी वने और तब उन्होंने एक बाण से तीनों पुरों को भस्म कर दिया।

क्रौंचरंध्र — एक पर्वत जिसपर क्रौंच दैत्य रहता था। इसे कार्तिकेय ने मार डाला था। क्रौंचरंध्र इसी पर्वत के एक छेद को कहते हैं। कहते हैं क्रौंच पर्वत को फाड़ने पर कार्तिकेय को अभिमान हो गया, तब परशुरामजी ने उनका अभिमान चूर करने के लिए क्रौंच पर्वत में ऐसा बाण मारा कि उसे बींधता हुआ पार हो गया। उसी सूराख को क्रौंचरंध्र कहते हैं।

अलकापुरी — हिमालय पर्वत पर बसी हुई पुराण-प्रसिद्ध कुबेर की नगरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'मंडल' की दूसरी लोक-प्रिय पुस्तकमालाएँ

सुलभ विज्ञान-माला

इन पुस्तकों में विज्ञान की बातें सरल और रोचक ढंग से बताई गई हैं। मोटा चिकना कागज : सैकड़ों चित्रों सहित : दोरंगी छपाई तथा आकर्षक तिरंगा कवर।

१. प्रकाश की बातें	(ब्रह्मानन्द : नरेश वेदी)	१.५०
२. ध्वनि की लहरें	(ब्रह्मानन्द : नरेश वेदी)	१.५०
३. गरमी की कहानी	(ब्रह्मानन्द : नरेश वेदी)	१.५०
४. धरती और आकाश	(छोटूभाई सुथार)	१.५०
५. आकाश-दर्शन	,, ,,	२.००

मानव की कहानी

पृथ्वी के बनने से लेकर अबतक के सृष्टि-विकास की कहानी

१. पृथ्वी बनी	(देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय)	१.००
२. जीव आया	,, ,,	१.००
३. मनुष्य जन्मा	,, ,,	१.००
४. मनुष्य का बचपन	,, ,,	१.००

जीव-जगत की कहानी

इन पुस्तकों में जल, थल तथा नभ के जीवजंतुओं एवं पशु-पक्षियों की जानकारी है। सुन्दर दोरंगी छपाई : अनेकों चित्र।

१. समुद्र के जीव-जंतु	(सुरेशसिंह)	१.५०
२. पक्षियों की दुनिया	,,	१.५०

इन तथा अन्य पुस्तकों के लिए लिखिए

सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

92

संस्कृत-साहित्य-सौरभ-माला की पुस्तकें

१. कादंबरी
२. उत्तर-रामचरित
३. वेणी-संहार
४. शंकुतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार-चरित : भाग १
१५. दशकुमार-चरित : भाग २
१६. विक्रमोर्वशी
१७. मेघदूत
१८. मालती-माधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमार-संभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावण-वध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक
३१. तिलकमंजरी
३२. प्रतिमानाटक
३३. तीन नाटक
३४. नैषध-चरित

४०न० पै०

मूल्य प्रत्येक का [redacted] पै०

४० चालीस न० पै०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu